मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी विमर्श

18

मीनाक्षी त्यागी
शोधार्थी
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला
ईमेलः menakshe15714@gmail.com

डॉ. स्नेहलता गोस्वामी
एसोसिएट प्रोफेसर (हिन्दी विभाग)
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला

सारांश

मन्नू भण्डारी के कथा–साहित्य में भारतीय नारी की विविध स्थितियों को चित्रित किया गया हैं। मन्नू भंडारी ने नारी को त्रिया से सम्बोधित किया है। नारी की समस्याएं आज भी है, जिनसे मुक्ति मिलने का प्रयास नारी कर रही है। जब नारी अपनी विविध स्थितियों में अपने अस्तित्व और अस्मिता को सुरक्षित रख सकेगी, तभी उसे गरिमा प्राप्त होगी। नारी विमर्शकारों में मन्नू भण्डारी का नाम उल्लेखनीय है। वह नारीवादी विमर्शकारों से अलग विचार रखती है। इनके कथा साहित्य में नारी विमर्श के अनेक सोपनों को उठाया गया है। नारी विमर्श में यौन स्वतंत्रता का मन्नू भण्डारी विरोध करती है। नारी की आर्थिक स्वतंत्रता ने उसके सम्बन्धों को बदल दिया है। वर्तमान समय में मन्नू भण्डारी के साहित्य में नारी के स्वरूपों को बताया गया है।

मुख्य शब्द

कथा–साहित्य, नारीवादी, विमर्शकारों, नारी विमर्श, आर्थिक स्वतंत्रता।

प्रस्तावना

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी का उल्लेखनीय स्थान है। इनकी प्रतिभा साहित्य के क्षेत्र में चारों ओर फैली हुई है। इनके साहित्य विविध रूपों जैसे उपन्यास, कहानी एवं नाटक आदि में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। हिन्दी कथा साहित्य में मन्नू भण्डारी ने भारतीय समाज में नारी की मुक्ति के प्रश्न को गंभीरता से उठाती है। उन्होंने परम्परागत रूढ़ियों मान्यताओं तथा नैतिकता से सुशोभित नारी के मौलिक व्यक्तित्व की खोज की है। वह नारी को पारंपरिक नारीत्व के भार से मुक्त करना चाहती है। ''ऊँचाई'' कहानी की नायिका षिवानी यौन संबन्धों की परंपरावादी मान्यताओं व रूढ़ियों से स्वतंत्र होती नारी है। जिसको मन्नू भण्डारी ने अपने साहित्य में बहुत गंभीरता के साथ दर्शाया है। मन्नू भण्डारी अपने कथा साहित्य में नारी के जीवन में मानव की अनिवार्यता को स्वीकार करती हैं। वे नारी को पति की सहगामिनी के रूप में देखती हैं, अंधानुगामिनी के रूप में नहीं। दीवार, बच्चें और बरसात कहानी में ऐसी शिक्षित नारी का वर्णन है, जो बलात् मानव को अपना शरीर न दे पाने की अपराधी है। मानव समाज की दृष्टि में ही नहीं बल्कि अशिक्षित नारियों की दृष्टि में भी नारी पुरूष की एक संपत्ति है। नारी केवल भोग्या है, वह मात्र शरीर है, व्यक्ति नहीं अथवा उसका किसी भी प्रकार का कोई अस्तित्व ही नहीं है। इन्हीं सभी समस्याओं को उजागर करने तथा महिलाओं को सशक्त बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 'कमरा और कमरे, कहानी में नारी के दबे व्यक्तित्व को, चित्रित करती है।

मन्नू भण्डारी आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य के उन गिने–चुने जागरूक तथा संवेदनशील कथाकारों में हैं जिन्होंने अपनी कृतियों में नारी जीवन का सशक्त और यथार्थ चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी नारी की दशा एवं दिशा का मार्मिक चित्रण कर पुरूष के वर्चस्ववादी समाज में नारी की मुक्ति के सवाल को गम्भीरता के साथ उठाती है। उन्होंने नारी–विमर्श को एक नया अर्थ देते हुए नारी अस्मिता के प्रश्नों को बड़ी गम्भीरता तथा मुखरता के साथ चित्रित किया है। इसलिए आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में नारी–विमर्श को गम्भीरतापूर्वक स्थापित करने का श्रेय मन्नू भण्डारी को दिया जा सकता है। वह नारियों की स्थितियों, परिस्थितियों के सूक्ष्म ऑकलन तथा कुशल प्रस्तुतीकरण में सिद्धहस्त है, उनके रचना संसार से गुजरते हुए नारी के अस्तित्व के उन तमाम पक्षों से साक्षात्कार का अवसर मिलता है जिन्हें समझे बिना नारी के पूरे बजूद को समझ पाना कठिन है। मन्नू भण्डारी का कथा संसार नारी–मुक्ति आन्दोलन का बीज मन्त्र है जो नारी–विमर्श के नाम पर दिग्भ्रमित होने वालो को सही राह पर अग्रसर करता है।

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी विमर्श

भारतीय त्रिया (नारी) की मुक्ति के आन्दोलन का इतिहास बहुत पुराना है, यह अलग बात है कि तब उसे 'नारी–विमर्श' या 'नारीवादी साहित्य' जैसी संज्ञा से विभूषित नहीं किया गया था। किन्तु समय एवं परिस्थिति के अनुसार नारी की दशा को सुधारने एवं

उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने के सतत् प्रयास होते रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद से नारी–विमर्श एक गम्भीर विचार केन्द्रित मुद्दा रहा है। किन्तु बिडम्बना यह रही है। कि इस विषय को छूते ही बड़े–बड़े बुद्धिमान व्यक्ति मानवीयता का आवरण उतार कर पुरूषवादी सुर अलापने लगते हैं। अक्सर यह विषय एक फैशनेबल बहस मात्र बनकर रह गया है। लेकिन विकास की प्रक्रिया धीमी हो सकती है, अवरूद्ध नही। इसीलिए फैशनेबल बहस बन जाने व अपने स्वरूप की सत्यता को खो देने के उपरान्त भी ऐसा चिन्तन चलता रहता है, जिसने नारी–विमर्श के बारे में भ्रान्तियों को दूरकर उसके सत्य को स्थापित ही नहीं किया बल्कि नारी–विमर्श की एक स्वस्थ व्याख्या की है। वर्तमान में नारी विमर्श एक ज्वलन्त मुद्दा हो गया है। यह आज के समय में एक तरह से अब तक की परिभाषित त्रिया की भूमिका को बदलने वाला विमर्श भी है। इस विमर्श ने शताब्दियो से चली आ रही नारी की छवि को तोड़कर उसे आधुनिक समाज में एक अलग स्थान दिया है।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में नारी के प्रति संवेदना

मन्नू भण्डारी की कहानियों में आधुनिक नारी की वैयक्तिक अस्मिता उजागर हुई है। ईसा के घर इंसान' कहानी में नन्स एंजिला फादर की अलौकिक दिव्यता का पर्दाफाश करके धर्म के प्रति नारी शोषण का विरोध करती है। 'जीती बाजी की हार' कहानी में आशा, नलिनी और मुरला अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व और अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक रहती है। 'दीवार बच्चे और बरसात' कहानी की नायिका शिक्षित है, नवजागृति से प्रभावित है, स्वतन्त्र विचारों वाली है। अतः नारियों की आत्मनिर्भरता की प्रबल समर्थक है। 'रानी मॉ का चबूतरा' कहानी की नारी गुलाबी आत्मविश्वास से भरी है। वह अपनी वैयक्तिक अस्मिता के लिए पति और समाज से टक्कर लेती है। 'क्षय' कहानी में पिता के रोगी हो जाने पर परिवार का दायित्व बड़ी बेटी कुन्ती संभालती है। इसी प्रकार 'हार' 'नई नौकरी' 'कमरे कमरा और कमरे' 'बन्द दराजों का साथ' और 'दरार भरने की दरार' कहानियों में नारी के स्वतन्त्र अस्तित्व एवं व्यक्तित्व का चित्रण है। आधुनिक शिक्षित आत्मनिर्भर नारियॉ यह समझ नही पाती कि उन्हें मुक्ति किससे चाहिए। वैयक्तिक अस्मिता का नवीन मूल्य नारी में पनप रहा है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में स्वतन्त्रता प्राप्ति के उद्देश्य से मोहभंग हो गया है। राजनीति में भ्रष्ट नेतृत्व, वोट की नीति आतंकवाद, भ्रष्टाचार आदि का वर्चस्व है। धर्म और जाति के नाम पर राजनीतिज्ञ वोट मॉगते हैं तथा साम्प्रदायिक दंगे कराते हैं। इस परिवेश में महिला हताश व निराश है। परन्तु शिक्षा नेनारी को एक नई चेतना प्रदान की है। अब महिला शिक्षित और जागरूक होकर राजनीति में भागीदारी करने लगी है। आधुनिक युग में जो परिवर्तन हुआ है, वह नारीवाद की ही उपज है। मन्नू भण्डारी ने अपने कथा साहित्य 'मैं हार गई' कहानी में राजनीति की स्वार्थपरता, 'एक प्लेट सैलाब' में राजनीतिक भ्रष्टाचार एंव परिवारवाद का वर्चस्व, 'महाभोज' उपन्यास में विकृत राजनीति व टूटे हुए मूल्यों का चित्रण किया है।

स्वातन्त्रयोत्तर भारतीय समाज में महिला शिक्षा का प्रचार–प्रसार हुआ, पाश्चात्य शिक्षा के प्रति आकर्षण से नारी में नवीन चेतना आई है। पाश्चात्य शिक्षा से प्रभावित नारी की दृष्टि में वह पति की दासी नहीं है, बल्कि उसका भी पति के समान अधिकार है। नारी ने सार्वजनिक क्षेत्र में कार्य किया और पुरूष के समान ही सफलता अर्जित की है। महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए सरकार ने अनेक योजनायें प्रस्तुत की हैं। नारी सशक्तिकरण और नारी अस्मिता पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से हर क्षेत्र में पदापर्ण कर रही है। आज एक ओर बड़ी संख्या में अशिक्षित औरतें है। जो पॉच–छः सौ रूपए महीने पर कार्य करती हैं। दूसरी ओर शिक्षित लडकियॉ हैं जिन्हें न तो रोजगार मिल रहा है और न ही उनका विवाह ही हो रहा है। अब नीति निर्धारकों को विचार करना चाहिए कि उच्च शिक्षित लड़कियों को रोजगार मिलना चाहिए जिससे वह आत्मनिर्भर हो सकें। मन्नू भण्डारी की 'दीवार बच्चें और बरसात' आदि कहानियों की शिक्षित नारियॉ स्वतन्त्र विचार रखती हैं और आत्मनिर्भरता की समर्थक हैं। 'रेत की दीवार' कहानी में बेरोजगारी 'यही सच है' कहानी में साक्षात्कार के आडम्बर का चित्रण है। 'क्षय' कहानी में ट्यूशन की समस्या है जबकि 'महाभोज' उपन्यास में दलितों की शिक्षा पर बल दिया गया है।

मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में नारी का चित्रण

मन्नू भण्डारी ने स्त्री लेखन को एक नया अर्थ देते हुए स्त्री अस्मिता के प्रश्न को बड़ी गम्भीरता के साथ चित्रित किया है। लेखिका पारम्परिक स्त्रीत्व से मुक्त करके नारी को वैयक्तिक अस्मिता का बोध कराना चाहती है, जिससे उनमें सर्वदा एक बोल्डनैस विद्यमान रहे। आज की नारी महत्वाकांक्षाओं, अपेक्षाओं, अर्न्तद्वन्द्वों और तनावों में जूझती रहती है, नारी मुक्ति की कामना करती है किन्तु परम्परागत संस्कारों को त्यागकर कदापि नहीं। पति के विवाहेत्तर प्रेम सम्बन्धों पर रंजना परम्परागत भारतीय नारी की तरह आँसू नही निकालती बल्कि पति अमर से स्वयं को मुक्त कर लेती है। लेखिका ने अमला के रूप में परित्यक्ता नारी का चित्रण किया है। 'यही सच है' कहानी की दीपा प्रेमी से निराष होकर दूसरे व्यक्ति संजय से प्रेम करने लगती है।

स्त्री–सुबोधिनी' कहानी की सुबोधिनी आधुनिक नारी है जो अपने विवाहित बॉस शिन्दे के प्रेम पाश में फॅस जाती है। आते जाते यायावर की मिताली सहपाठी से प्रेम करती है तथा शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापित कर लेती है। 'एक बार और' कहानी की बिन्नी आधुनिक युवती है जो होटल में प्रेमी कुन्ज की पत्नी बनकर रहती है लेकिन कुन्ज विवाह मधु से करता है। 'चश्मे' कहानी की शैल का प्रेम, त्याग, सेवा, निष्ठा आदि पर आधारित है। 'घुटन' कहानी की 'मोना' ऐसी युवती है जो विषम परिस्थितियों में घुटने टेक देती है। 'आकाश के आईने में' कहानी में सुषमा अपने प्रेम के लिए परिवार के विरोध से पीड़ित होती है। मन्नू भण्डारी की कहानियॉ, पुरूष सत्तात्मक व्यवस्था और विसंगतियों को बेनकाव करती है। 'यही सच है' और ऊॅचाई ऐसी प्रेम की कहानियॉ हैं जिन्हें नैतिक–अनैतिक ढॉचे में रखकर नहीं देखा जा सकता। 'गीतका चुम्बन' कहानी आकांक्षा के द्वन्द्व की कहानी है जो पुराने और नवीन संस्कारों के बीच छटपटाती है।

मन्नू भण्डारी की कहानियाँ संयुक्त परिवार के बीच पनपती है। आज की नारी पारिवारिक समस्याओं में उलझी होने के कारण आधुनिक परिवेश में जीना चाहती है, इसलिए परम्परा को तोड़कर जी रही है। मन्नू भण्डारी की 'आकाष के आइने' कहानी में संयुक्त परिवार में घुटती नारी का चित्रण, 'इनकम टैक्स और नींद' कहानी में प्राचीन और नवीन विचारों में द्वन्द्व है।

स्वतन्त्र भारत में पाश्चात्य सभ्यता और षिक्षा से नारी जागरूक हुई तथा उसने कामकाजी बनकर अपने व्यक्तित्व को निखारा है। वर्तमान में कामकाजी नारी घर और नौकरी का दोहरा दायित्व सम्भालती है तो उसके सामने अनेक प्रकार की समस्यायें आती हैं। मन्नू भण्डारी ने कामकाजी नारी के व्यक्तित्व को उजागर किया है जिसमें उनके संघर्ष का चित्रण किया गया है। 'क्षय' कहानी में कुन्ती अविवाहित कामकाजी नारी है जो किसी भी कीमत पर अपने सिद्धान्तों आदर्शो का परित्याग नहीं करती। 'घुटन' कहानी की अविवाहित कामकाजी नारी 'मोना' पारिवारिक दायित्व के कारण दम तोड़ देती है।

''आपका बंटी'' में चित्रित नारी संवेदना

'आपका बंटी' उपन्यास की नारी पात्र शकुन ने शोषण एवं उत्पीड़न के प्रति प्रतिरोध व्यक्त किया है। समाज में नारी को परित्यक्ता और विधवा का अभिशाप भोगना पड़ता है, पुरूष को नहीं। परिवार भारतीय समाज की आधारभूत इकाई है। परिवार वह से तु है जो व्यक्ति को समाज अथवा समाज को व्यक्ति से जोड़ता है। परिवार में ही व्यक्ति के विभिन्न सामाजिक सम्बन्धों की नींव है नारी पुरूष। मन्नू भण्डारी 'आपका बंटी' उपन्यास के केन्द्र में परिवार है और इसमें परिवार के टूटने से बच्चे के जीवन में अकेलेपन की समस्या के साथ–साथ नारी के संघर्ष एवं टूटने की पीड़ा को भी चित्रित किया गया है । मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में संयुक्त परिवार व्यवस्था की कमियों की अभिव्यक्ति आकाश के आइने में नामक कहानी में की गई है। आज की नारी चेतना से सम्पन्न नारी एकल परिवार को महत्व देती है, लेकिन उसमें भी अनेक विसंगतियाँ है, एकाकीपन है। इस व्यवस्था में भी नारी को वह स्थान नहीं मिल पाया है, जिसका वह अधिकार रखती है। भारतीय समाज में नारी की कोई पहचान नहीं है, विवाह पूर्ण उसकी पहचान पिता से, विवाह के बाद पति से और अंत में पुत्र से जुड़ जाती है।

''त्रिशंकु'' में चित्रित नारी संवेदना

मन्नू भण्डारी की कहानी 'त्रिशंकु' में समाज–व्यवस्था के विरूद्ध प्रतिरोध है।'' 'मैं हार गई' कहानी में राजनैतिक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध है। 'आपका बंटी' उपन्यास की नारी पात्र शकुन ने शोषण एवं उत्पीड़न के प्रति प्रतिरोध व्यक्त किया है। 'त्रिशंकु' कहानी में 'तनु' की मम्मी उसे स्वतंत्र विचारों का बनाना चाहती है। मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में शोर शराबे का वर्णन कम है। 'एक इंच मुस्कान' उपन्यास में विवाह के लिए गीरा प्रतिरोध है। 'ईसा के घर इंसान' कहानी की एंजिला धर्म के नाम पर होने वाले स्त्री शोषण के विरूद्ध प्रतिरोध करती है तथा अन्याय के लिए चर्च और फादर का भंडाफोड़ करती है।''

''रानी मॉ का चबूतरा'' में चित्रित नारी संवेदना

रानी मॉ का चबूतरा' कहानी में गुलाबी अपने पति को झाडू मार–मार कर घर से बाहर निकाल देती है, क्योंकि वह शराबी और निकम्मा है। मन्नू भण्डारी की दृष्टि में प्रतिरोध यदि सार्थक होगा तो समाज के विकास की गति परिवर्तित होगी। इससे नगरीकरण का प्रमुख कारण बढ़ती हुई बेरोजगारी है। आधुनिक शहरों में सहानुभूति और मानवीयता का स्थान स्वार्थ, तनाव, अकेलेपन और कुण्ठा ने ले लिया है। मन्नू भण्डारी ने महानगरीय जीवन को जिया है, इसे निकटता से देखा है। इसलिए उनकी रचनाओं में स्वाभाविकता का मंगल–कुंकुम सर्वत्र बिखरा हुआ है। षहरी जीवन की संस्कृति में प्रेम, विवाह, तलाक सामान्य बात है, जिसका वर्णन मन्नू भण्डारी के कथा साहित्य में है।

''यही सच है'' में चित्रित नारी संवेदना

'यही सच है' कहानी में हाबड़ा स्टेशन के प्लेटफार्म का अत्यन्त सहज स्वाभाविक चित्रण किया है। मन्नू भण्डारी को ग्रामीण जीवन की अपेक्षा शहरी जीवन में अधिक स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व भाव दिखाई देता है। समाज और संस्कृति के निर्माण में पुरूष अपना वर्चस्व स्थापित कर नारी को अपने अधीन कर लेता है, और नारी इसे अपनी नियति मान लेती है। भारतीय समाज में वर्चस्व की संस्कृति जाति व्यवस्था में निहित है। जाति व्यवस्था में शूद्र एवं नारी दोनों शोभित है।

उपसंहार

मन्नू भण्डारी का कथा साहित्य सामाजिक समस्याओं से ओतप्रोत है। समाज के वर्णन में स्त्री–पुरूष का आगमन अपरिहार्य है। ''जहाँ नारी शोषण की बात आती है, वहॉ वह नारीवादी हो जाती हैं।'' वह परम्परा को तोड़कर नया आकार निर्मित नहीं करतीं, बल्कि परम्परा के चौखटे में ही आधुनिकता का आह्वान करती हैं। मन्नू भण्डारी की नारी आन्तरिक संस्कारों, भावनाओं, संवेदनाओं, परिस्थितियों और दबावों को कभी झेलती है, कभी तोड़ती है, और कभी स्वयं टूटती है। लेखिका का स्वयं का जीवन कथा साहित्य में भी अवतरित हुआ।

सन्दर्भः–

1. भण्डारी, मन्नु; 1971। आपका बन्टी।। गणोदय (धर्मयुग में धारावाहिक), नई दिल्ली।
2. भण्डारी, मन्नु; 1979। महाभोघ। नई दिल्ली।
3. भण्डारी, मन्नु; 1957। मैं हार गई। नई दिल्ली।

4. भण्डारी, मन्नु; 1959। तीन निगाहों का एक चित्र।
5. भण्डारी, मन्नु; 1962। एक प्लैट सेलाब।
6. भण्डारी, मन्नु; 1966। यही सच्चा है।
7. भण्डारी, मन्नु; 1978। त्रिशंकु।
8. भण्डारी, मन्नु; 2008। संपूर्ण कथाएं।
9. भण्डारी, मन्नु; 1966। बिना दीवारों का घर।
10. भण्डारी मन्नु; 1990। रानी मॉ का चबुतरा।